

Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

मानसिक द्वंद या मानसिक संघर्ष

मानसिक द्वंद या मानसिक संघर्ष की स्थिति तब उत्पन्न होती है, जब परस्पर दो या दो से अधिक विरोधी अथवा एक दूसरे से मेल न खाने योग्य प्रवृत्तियां /विचार या इच्छाएं एक ही साथ अपनी संतुष्टि चाहती हैं। ऐसी स्थिति में दोनों प्रवृत्तियां या इच्छाएं एक दूसरे की संतुष्टि में बाधा डालती हैं जिससे द्वंद की स्थिति उत्पन्न होती है और व्यक्ति किसी एक की संतुष्टि के बारे में निर्णय करने में कठिनाई अनुभव करता है। अंततः वह दोनों इच्छाओं में से किसी एक प्रबल इच्छा को चुनकर दूसरे को त्याग कर देता है

वास्तव में मानसिक द्वंद व्यक्ति की एक ऐसी मानसिक अवस्था होती है जिसमें दो या दो से अधिक परस्पर विरोधी प्रवृत्तियां एक ही साथ एक ही समय पर अपने संतुष्टि चाहती हैं, जबकि व्यक्ति के लिए उन्हें एक साथ संतुष्ट करना काफी कठिन होता है ऐसी स्थिति में व्यक्ति किसी एक ही इच्छा को पूरी कर पाता है और दूसरे को त्याग देता है। जब कभी दोनों प्रवृत्तियां अति आवश्यक हो और दोनों की संतुष्टि एक ही साथ आवश्यक हो, ऐसी स्थिति में व्यक्ति मानसिक द्वंद में फंस जाता है जो उसे असामान्यता की तरफ ले जाता है। जैसे:-रघु 'करोना' वायरस के डर से घर में रहना चाहता है जबकि दूसरी तरफ अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए वह बाहर कमाने के लिए जाना चाहता है। ऐसी स्थिति में उसके सामने दो विचार या इच्छाएं उत्पन्न एक ही समय में उत्पन्न हो रही हैं; एक अपना जीवन बचाने के लिए और दूसरा अपने परिवार के पालन पोषण करने के लिए। परंतु उसे इन दोनों विचारों में से किसी एक को ही चुनना होगा। ऐसी परिस्थिति में अगर रघु अपने मानसिक द्वंद का समाधान नहीं कर पाता है और किसी एक प्रबल इच्छा को दूसरे पर वरीयता नहीं दे पाता है तो वह मानसिक द्वंद में फंस जाएगा और उसका व्यवहार असामान्य हो जाएगा।

मानसिक द्वंद या संघर्ष के प्रकार:-

मानसिक द्वंद मुख्य रूप से चार प्रकार के होते हैं ----

- 1) अधिगम अधिगम मानसिक द्वंद
- 2) अधिगम परिहार मानसिक द्वंद
- 3) परिहार परिहार मानसिक द्वंद
- 4) द्विउपागम परिहार मानसिक द्वंद

1) अधिगम-अधिगम मानसिक द्वंद-यह मानसिक द्वंद का एक ऐसा प्रकार है जिसमें व्यक्ति के समक्ष दो धनात्मक इच्छाएं या प्रवृत्तियां एक साथ एक ही समय पर उत्पन्न होती हैं और व्यक्ति को इन दोनों इच्छाओं की पूर्ति करना आवश्यक होता है, जैसे-मिश्रा सर को अमर सर की पटना में हो रही शादी में शामिल होना है और ठीक उसी दिन उन्हें दिल्ली में अपने नतनी के जन्मदिन में शामिल होना है। ऐसी स्थिति में उनके सामने दो धनात्मक लक्ष्य हैं जिसमें किसी एक की प्राप्ति संभव है वे किसी एक ही समारोह में शामिल हो सकते हैं। ऐसी अवस्था में उनमें मानसिक द्वंद उत्पन्न होगा कि वह किस समारोह में शामिल हो और किस को त्यागे। ध्यान रहे कि उन्हें दोनों समारोह में शामिल होना अति आवश्यक है।

2) अधिगम-परिहार मानसिक द्वंद-यह मानसिक द्वंद का एक ऐसा प्रकार है जिसमें व्यक्ति के समक्ष दो परस्पर विरोधी विचारधाराएं, एक धनात्मक तथा एक ऋणात्मक विचार/इच्छा एक साथ एक ही समय पर उत्पन्न होती हैं और व्यक्ति को इन दोनों इच्छाओं की पूर्ति करना आवश्यक होता है। जैसे-रोहन अपने मित्रों के साथ एक पार्टी में शामिल होना चाहता है लेकिन कोरोना के भय से उसमें जाना नहीं चाहता। यानी उसे एक तरफ तो मस्ती करने की इच्छा है और दूसरी तरफ उसे कोरोना वायरस से संक्रमित होकर बीमार होने और फिर मर जाने

का डर भी है।

3) परिहार-परिहार मानसिक द्वंद-यह मानसिक द्वंद का ऐसा प्रकार है जिसमें दो ऋणात्मक विचारधाराएं एक साथ एक ही समय पर उत्पन्न होकर अपनी संतुष्टि प्राप्त करना चाहती हैं। दूसरे शब्दों में व्यक्ति के समक्ष दो ऐसी इच्छाएं उपस्थित होती हैं जिनसे वह दोनों से बचना चाहता है परंतु उसे उनमें से किसी एक की पूर्ति हेतु निर्णय लेने की बाध्यता अवश्य होती है। उदाहरणस्वरूप-अब्दुल सर कोरोना के डर से कॉलेज नहीं जाना चाहते हैं और दूसरी तरफ वह अपने घर पर रहते हैं तो उन्हें घर की साफ सफाई एवं बर्तन साफ करना पड़ता है, जिससे घर पर भी नहीं रहना चाहते। लेकिन उन्हें किसी एक स्थान पर रहना आवश्यक होता है। ऐसी स्थिति 'आगे कुआं पीछे खाई' वाली होती है

4) द्विउपागम-परिहार मानसिक द्वंद-यह मानसिक द्वंद का एक ऐसा प्रकार है जिसमें एक या एक से अधिक धनात्मक विचार एवं दो या दो से अधिक ऋणात्मक विचार अथवा दो या दो से अधिक धनात्मक विचार एवं एक या एक से अधिक ऋणात्मक विचार एक साथ व्यक्ति के समक्ष उपस्थित होते हैं। यह मानसिक द्वंद कि ऐसी स्थिति होती है जो व्यक्ति की मानसिक अवस्था के लिए काफी हानिकारक होती है और व्यक्ति को असामान्यता की तरफ ले जाती है। उदाहरणस्वरूप-बैंक में कार्यरत सीता एक ऐसे लड़के से प्यार करती है जो बेरोजगार है और गांव में रहता है, वह उससे शादी करना चाहती है। ऐसी स्थिति में उसके सामने कई प्रकार के धनात्मक एवं ऋणात्मक विचार उत्पन्न हो रहे हैं जैसे अगर वह अपने मनपसंद लड़के से शादी करती है तो उसे अपने बैंक की नौकरी छोड़कर सुदूर देहात क्षेत्र में रहना पड़ेगा। यहां लड़के से शादी करना उसका धनात्मक विचार है, नौकरी का छोड़ना ऋणात्मक विचार है, अपने शहर से दूर देहात में जाना ऋणात्मक विचार है। आगे रोजी-रोटी का संकट ऋणात्मक विचार है।

स्पष्टतः मानसिक द्वंद या मानसिक संघर्ष व्यक्ति के समक्ष एक ऐसी मानसिक अवस्था है जिसमें उसके समक्ष कई प्रकार के धनात्मक एवं ऋणात्मक विचार एक साथ उत्पन्न होते हैं और सारे विचार अपनी संतुष्टि एक ही समय पर पूरा करना चाहते हैं जो व्यक्ति के लिए संभव नहीं हो पाता और ऐसी स्थिति में जब व्यक्ति उन विचारों के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता तो वह असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति का कारण बनता है।

27/07/2020.

- Sanjay Kumar